नाम- भगवद्गीतार्थ संग्रह

No- ~~57~~

16
Mr Marwaha List

18/1

No 87

'𑆨𑆓𑆮𑆢𑇀𑆓𑆵𑆠𑆳𑆫𑇀𑆡𑆱𑆁𑆓𑇀𑆫𑆲𑆂'

No 57

ॐ श्रीगुरवे परमशिवा[illegible] नमः ॐ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ज्ञानमितमुस्यमध्ये सेरं ससमुपम्र ल्पेन

वाम पवनखध्ये रु ल्लुतं तम पिकविस

गीं मचमेश् ल्पुं समेह्निं माजुवा दाभ्या

वह्रु यांतुककवेनवतुमानानं गत वैगाह

रैप समा खुह्गीनं ममानमेवरु तम्निं म्नि

तयेमानक सविकल्पकमविति सविकल्पम

वमकल्पः पा रुवः सङ्कविकल्पकमवे

ति विकल्पनः तेकिमजवत्रकेः यल

केलिन्तु तनि वावतो ममेत्तिकवतीतिम

मकः सविकल्पकः पा रुः सङ्कः ॥ किं

वानेवरु पनिगल नेन र्नं तावरु नुतव

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆣𑆽𑆫𑆽𑆢𑆽𑆂 𑆑𑆶𑆬 𑆓𑆳𑆠𑆁 𑆮𑆡𑆱 𑆱𑆲𑆳𑆑𑆳𑆑𑆽𑆂

𑆇𑆱𑇀𑆩 𑆲𑆼𑆠𑆼𑆫𑆠𑆴𑆪𑆱 𑆑𑆶𑆬𑆥𑆢𑇀𑆩𑆱𑇀𑆪 𑆩𑆳𑆫𑇀𑆠𑆟𑇀𑆝𑆂 𑇒𑇑

𑆇𑆱𑇀𑆩 𑆑𑆶𑆬𑆥𑆢𑇀𑆩𑆁 𑆩𑆲𑆳𑆁 𑆬𑆳𑆤𑆳𑆩𑆤 𑆥

𑆫𑆑𑆼 𑆤𑆴𑆥𑆁𑆑𑆩𑆼𑆣𑆮𑆳𑆠𑆶 𑆠𑆱𑇀𑆪𑆩 𑇒𑇒 𑇅

𑆮𑆴𑆱𑆼𑆣𑆢𑆬𑆱𑇀𑆪 𑆢𑆶𑆲𑆴 𑆮𑆴𑆱𑆼𑆣𑆱𑇀𑆪 𑆢𑆠𑆁

𑆩𑆢𑆥𑆳𑆠𑆑𑆴𑆲𑆼𑆠𑆶𑆱𑆼𑆮 𑆩𑆲𑆳𑆥𑆳 𑆟𑆴𑆥𑆳𑆠𑆶𑆁 𑆥𑆫𑆳

𑆥 𑆫𑆴𑆱𑆮𑆱𑇀𑆪𑆱𑆤𑆳𑆥𑆳𑆠𑆳𑆩𑆤𑆼𑆮 𑆲𑆼𑆤𑆼𑆮𑆱𑆤𑆩𑆳𑆢 𑇒𑇓

𑆟𑆵𑇆 𑆮𑆸𑆠𑇀𑆠𑆴𑇆 𑆟𑆵𑇆 𑇓 𑆝𑆽𑆮𑆠𑆩𑆢𑇀𑆢𑆥𑆁𑆑𑆶𑆁 𑆢𑆶𑆮 𑆩𑆴𑆠 𑆮𑆪𑆩𑆳

𑆥𑆢𑇀𑆢 𑆱𑆥𑆼𑆬𑆼𑆟𑆼𑆤 𑆢𑆠𑆶𑆁 𑆱𑆬𑆳𑆤𑆩𑆲𑆳𑆠𑆂 𑇒𑇔

𑆮𑆪𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆑𑆽𑆮 𑆥𑆳𑆢𑇀𑆮 𑆟𑆴𑆤𑇀𑆪𑆥𑆳 𑆱𑆮𑆫𑆮𑆲𑆼𑆠𑆂

𑆫𑆮𑆁𑆩𑆮𑆼 𑆢𑆶𑆮𑆴𑆮𑆼𑆑𑆴 𑆢𑆶𑆩𑆩𑆮𑆴𑆮𑆼𑆑𑆴𑆤𑆂 𑆑𑆴𑆩𑆢𑆴𑆠𑆶

उमितं तावच्छुद्धं त्रिवृत्तं ८४ स्तडमितता

मितुद ॥ यदि मा मयूरीकामजंबुस

श्चपालवः पातुग्रहालेनद्वृषद्भेमेमा

तंठवेत् ८१ मल्लपश्वास ॥ ववम्हा

लानः महेगवेयष्टुउपविसता विभाद्र

मसातसपंमेकमंविप्रमानमः ८१

उसइमद्वनक्षेकः ॥ विदु विद्दि ठ्य ,, याउ

मद्रद्रविवमीतउः यङ्गाडयमपिटद्दा निवि

वेकेठेवत्, वि: ॥ मदमदेबारामादठिनव

७३ विविसितेणीउा मद्र देषुष्ठमेशाव: ॥ ॥

सुमेसुवदरामूयेलैवठणवानकानंषुतिरिष्यति

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धनमाद्यन्ते सेकंस कत्तां कतंसखेति तमु-
ङ्गनमुत्तसभमरहः ॥१०॥ नलयते ख्रिध
तेन कला मिश्वा पंडुवा ठविताव नगु
यः फलोविरः साब्धीतेपं भगालि नदद्व
तेदन्मने मगीते १० स्तलेन मङ्गायवि
नवमाद्य नत्रुवा ठवितं पितद्भुवैतोन
लयते नमस्रियतेयते भुवा नन ठवित पित
ठवितेव १० वेल विना सितं नितेपत
नमल मतुयमा फर्ब समनखः यमुदन
तेदत्रिव फबमा ११ यलनमाद्यान्ते खमु
दक्षन्ता ति नमदति नमदन्नुत दति तमु

𑆑𑆡𑆁𑆖𑆫𑆷𑆂 𑇒𑇑 𑆮𑆳𑆱𑆳𑆁𑆱𑆴𑆘𑆵𑆫𑇀𑆟𑆳𑆤𑆴𑆪𑆡𑆳-
𑆮𑆴𑆲𑆳𑆪𑆤𑆮𑆳𑆤𑆴𑆓𑆸𑆲𑇀𑆟𑆳𑆠𑆴𑆤𑆫𑆾𑆥𑆫𑆳𑆟𑆴𑆠𑆡𑆳
𑆯𑆫𑆵𑆫𑆳𑆟𑆴𑆮𑆴𑆲𑆳𑆪𑆘𑆵𑆫𑇀𑆟𑆳𑆤𑇀𑆪𑆤𑇀𑆪𑆳𑆤𑆴𑆱𑆁𑆪𑆳𑆠𑆴
𑆤𑆮𑆳𑆤𑆴𑆢𑆼𑆲𑆵𑇆𑇒𑇒𑇆 𑆪𑆡𑆳𑆲𑆴𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆳𑆤𑆴𑆠𑆩𑆶
𑆠𑆶𑆫𑆳 𑆒𑆁𑆨𑆶𑆑𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳𑆱𑆼𑆩𑆣𑆶𑆬𑆴𑆠𑆶𑆮𑆨𑆶𑆑𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳𑆠𑆠𑇀𑆮𑆩𑆴𑆠𑇀𑆫𑆩𑆷𑆣𑆼𑆮𑆁𑆢𑆼𑆮
𑆠𑆶𑆫𑆳𑆣𑆶𑆂 𑇒𑇓 𑆤𑆽𑆤𑆁𑆗𑆴𑆤𑇀𑆢𑆤𑇀𑆠𑆴𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆳𑆟𑆴𑆤𑆽-
𑆤𑆵. 𑆤𑆁𑆢𑆲𑆠𑆴𑆥𑆳𑆮𑆑𑆂 𑆤𑆖𑆽𑆤𑆁𑆑𑇀𑆬𑆼𑆢𑆪𑆤𑇀𑆠𑇀𑆪𑆳𑆥𑆾𑆤
𑆯𑆫𑆴. 𑆤𑆵. 𑆯𑆾𑆰𑆪𑆠𑆴𑆩𑆳𑆫𑆶𑆠𑆂 𑇒𑇔 𑆃𑆖𑇀𑆗𑆼𑆢𑇀𑆪𑆾𑆪𑆩𑆢𑆳𑆲𑇀𑆪𑆾-
𑇐𑇕 𑆪𑆩𑆑𑇀𑆬𑆼𑆢𑇀𑆪𑆾𑆯𑆾𑆰𑇀𑆪𑆍𑆮𑆖𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆂𑆱𑆫𑇀𑆮𑆓𑆠𑆂𑆱𑇀𑆡𑆳-
𑆟𑆶𑆫𑆖𑆬𑆾𑆪𑆁𑆱𑆤𑆳𑆠𑆤𑆂 𑇒𑇕 𑆃𑆮𑇀𑆪𑆑𑇀𑆠𑆾𑆪𑆩𑆖𑆴-
𑆤𑇀𑆠𑇀𑆪𑆾𑆪𑆩𑆮𑆴𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪𑆾𑆪𑆩𑆶𑆖𑇀𑆪𑆠𑆼𑆠𑆱𑇀𑆩𑆳𑆢𑆼𑆮𑆁𑆮𑆴𑆢𑆴𑆠𑇀𑆮𑆽-

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

इति किंख्यालं संभूतामिति पृच्छति १३

सद्भक्ता नीतिभक्ता निद्भक्तमद्भुता निठात

सद्भक्ता निपत्रे धततक पतिदेवता १४

नित्याः मद्भु नित्या वा पशु पशु संसकः

तं प्रत्येक भूत वद्भक्ताः भक्ते साद्भक्ताः मद्भुतस्य

द्भक्ता विका इति प्रभूत विका संसनीयं

नमूताये किंस पतुत्रलकालं कि खिसति

सां तसेव पथान्नस विसितु मूठावताया मान्तु

महेस खित ततुसातु पा खि संह तिवैसिंतु

नित्यमेव तथा मूठावमिति कन्सेभूता १५

तत्वविदंस भुद्भद पद्भस तिक खिसेन-

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] ८७

[illegible]

[illegible] ८८

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ८९ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ८७।८८।८४ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

क्लिष्टानपन्थाः फलकोत्तरः ४० अङ्गुष्ठेन
[illegible] तस्य फलं सिद्धं कस्य [illegible] च
उत्पन्नं अङ्गुष्ठे [illegible] विष्णु [illegible]
अङ्गुलिषु ४०॥ अङ्गुष्ठे [illegible]
तेषु गत [illegible] उष्णेन [illegible]:
[illegible] ४१ [illegible]
निःसरन्ति उष्णेन [illegible]
[illegible] च [illegible]
[illegible] ४२॥ [illegible] अङ्गुष्ठ [illegible]
[illegible]: [illegible]
[illegible]: [illegible] ४३॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
गी. [illegible]
गठि. गी. [illegible]
११ [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

विषयेन्द्रियाणि कं सत्व मात्मसन्नतं ॥१०॥ नन्वत्र पक्षे

पिकर्तृं क्रियाऽस्यात्मनोऽन्नस्वरूपं प्रवृत्ते ॥ विषया वि

वृत्ते निराकाङ्क्षेन्द्रियः संवत्सरं सत्स्वरूपं

चक्षुर्निवृत्ते १० यदुक्तं नैवेन्द्रियाणि विषयैः

सम्बन्धेन तासु तथापि तत्र विषया वस्तुः करणात्मा

परापरतत्त्वं सर्वं वस्तु पिण्डं निवृत्ते प्रवृत्ताभो

क्रियाऽऽयुक्तः संकल्पाधारं सर्वाणि करणानि

टी. येनिन्द्रियाणि सर्वेन्द्रियाणि परस्ततो वृत्तिः सह

शठि. टी. तत्प्रवृत्तिर्नामो निवृत्ते १०॥ यदुक्तं पिकि

१८ कैवल्य प्रत्यक्षविपक्षितः इन्द्रियालिप्त

साक्षीतिना विश्रमतं सतः १४ यदुक्तं

पि उपमितैरमरैरिन्द्रियैर्ह्रियते प्रसभं पुरुषस्य

पुरुषस्यापि वेदितव्यमनन्तरं लोकहर्षिणि इन्द्रियैर्वि

निलीनः ॥ ११ ॥ तानि सर्वाणि संयम्य

संयम्य मनसा युक्त आसीत मत्परः वशे हि य

स्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ १२ ॥ यस

वं मनसा इन्द्रियाणि नियमयति नरः प्रज्ञा मस

[illegible] प्रज्ञः [illegible] आसीत [illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥ ध्यायतो विषया

न्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते सङ्गात्संजायते कामः

कामात्क्रोधोऽभिजायते क्रोधाद्भवति संमोहः

संमोहात्स्मृतिविभ्रमः स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिना

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]

निर्याणे विषयत्यागः श्रीकण्ठ[illegible] १७ तस्माद्

यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः इन्द्रिया-

णीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता १० यस्य म-

नसो नियामकः स विषयेभ्य इन्द्रियाणि [illegible]

कर्षति [illegible] इति सर्वमिन्द्रियनिग्रह एवेति

तात्पर्यम् १० योगिनः सर्व[illegible]

[illegible] इति [illegible]

कथ्यते ॥ या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति सं-

यमी यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः १०

या सर्वेषां भूतानां निशा मोहिनी माया तस्यां मुनिर्

जागर्ति [illegible] यस्यां [illegible]

केऽपि विविधं संप्रवृत्तास्ते सामान्यैः शक्तिः पातेमोक्ष
पदार्थं प्रविष्टाः तत्त्वं ध्यात्वा तेषामेव सामान्य
शुद्धिं येन तत्त्वं नाम प्रदर्शनं श्रीपादैः तस्य तत्
लोकः प्रत्यक्षमुपमत्वं श्रवणाद्यैव द्वितीयमित्य
पि निरूप्य तत्त्वं पश्यन्ति उत्थितः तत्त्वं
नत्वं तत्त्वं लक्ष्य प्रवृत्ति श्रीपादैः नाडिया
गी. प्रत्यक्षमूलानि सिद्धानुपन्यासतः श्रीपादैः
सूत्रि. टी. नामः प्रवृत्तस्य मारास्ति सिद्धम्। विहायं
१७ सदसद्वेष्टी पदार्थे विशेषः सविषयं त्वत्
हे पदार्थः प्रवृत्त तद्वपि सिद्धम्। १०. सूत्रस्य
तुल्यत्व सामान्य प्रतिबन्ध सम्बन्धः प्रवि

सत्तिपच्छगा। तभक्त सापंखुष्विसत्तिसवेसमान्ति
सम्प्रैति नकामकामी १४ योगीनकामान्तेरनिद्रा
पति सर्वपितृद्विपपद्भतया तं विधया सरखुष्विसत्तु
वैतुगन्नपत्ति नलीवाना ऽवेन विस। सर्वं कृगीवैनिलो
तः १४॥ विदपकमात्रः सवाद्रसा ह्वागति
निमुद्रः निम्नेनिरद्धाः सन त्रिसविन
ह्वति १५॥ सयोगीसवकस्स त्रा सिद्रु ह्वत्तिरु
पंसोक्तसेति १३॥ तथा दृह्नीत्रिति: यारुदैवं
रखुविसृगति त्रिवद्गासतुकालेषिदृन्नवि
वालमह्वति १८ तथासिस्रुन्नसतुपवृंक
लसाद्रुं त्रितृवत्रि तिंरखु सगोरोवलह्वासंरुन्नप्रे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆑𑆬𑆁 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆁 𑆪𑆼𑆤𑆴𑆠𑇀𑆠𑆴 𑆠𑆢𑇀𑆓𑆶𑆤 𑆯𑆮𑆴𑆠𑇀𑆠𑆴 𑆠𑆱𑇀𑆪𑆥𑆷𑆮𑆼𑆯𑆳 𑆱𑆼𑆪𑆾
𑆱𑆼𑆪𑆳𑆪𑆠𑆪𑆳𑆠𑇀 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆥𑆟𑇀𑆜𑆁 𑆮𑆳𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆠𑆩𑆢 𑆑𑆴𑆬𑆽𑆯𑇀𑆫𑆽𑆂
𑆱𑆶𑆜𑆳𑆱𑆶𑆜𑆽𑆱𑇀𑆱𑆶𑆫𑆠𑆼 𑆪𑆼𑆮𑆁𑆑𑆳𑆫𑆶𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆮𑆴𑆢𑆷𑆮𑆩𑆳𑆤𑇀𑆠𑆶
𑆬𑆩𑆼𑆮 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆥𑆟𑇀𑆜𑆾𑆁 𑆥𑆳𑆢𑆼𑆤𑆩𑆮𑆳𑆤𑆳 𑆓𑆶𑆫𑆶𑆤 𑆩𑆴𑆬𑆁
𑆮𑆥𑆁𑆘𑆱 𑆠𑆠𑆴 𑆓𑆮𑆠𑆼 𑆠𑆩𑆮𑆳𑆪𑆁 𑆱𑆶𑆜𑆳𑆱𑆶𑆜𑆁𑆱𑆁𑆑𑆬
𑆜𑆠𑆼 𑇆 𑇑𑇓 𑇆 𑆪𑆢𑆳𑆱𑇀𑆜𑆮𑆴𑆠𑇀𑆫𑆶𑆠 𑆤𑆴𑆩𑆘𑇀𑆘𑆳𑆢𑆷𑆤
𑆢𑆩𑆱𑇀𑆜𑆮𑆂 𑆥𑆑𑇀𑆜𑆮𑆠𑆴 𑆩𑆘𑇀𑆘𑆼𑆢𑆷𑆥𑆑𑇀𑆜𑆂 𑆑𑆩
𑆩𑆱𑇀𑆜𑆮𑆂 𑇑𑇔 𑆑𑆩𑆮𑆴𑆑𑇀𑆫𑆼𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆁 𑆮𑆴𑆢𑆾𑆫𑆮𑆑𑇀𑆫𑆓
𑆫𑆩𑆱𑇀𑆜𑆮𑆩𑇅 𑆃𑆩𑆶𑆮𑆳𑆠𑆁 𑆯𑆑𑆶𑆤𑆴𑆠𑆶𑆁𑆥𑆑𑆾
𑆑𑇀𑆫𑆴𑆠𑆴𑆑𑇀𑆫𑆼𑆠𑆩𑇅 𑇑𑇕 𑆪𑆢𑆳𑆱𑆮𑆴𑆜𑆳𑆤𑆼𑆢𑆷𑆬𑆓𑆂
𑆲𑆜𑆮𑆑𑇀𑆫𑆓𑆴𑆑𑇀𑆫𑆩𑆥𑆳 𑆮𑆴𑆢𑆷 𑆑𑆫𑆠𑆴 𑆑𑆳𑆬𑆢𑆷𑆤𑆼𑆑𑆳

कल्पविध्यर्थं येनाति जडकृत्यं भवति तस्य पूर्वेषां सेयं
सौधाय तस्याः विशेषदोष्ठं वा तु विशेष किं लिखितैः
सुवर्णपुष्पैश्च पुष्ट्वा येवक्रियायामिति विधिर्यस्मात्
स्नानेन विशेषदोषं यदि न भवति गृह्यते मिलितं
वर्णं गृह्य इति भवति उत्तरार्थं सुवर्णं सुवर्णं कल
शे ॥ ३ ॥ गवां सुवर्णं भूत्वा निधनं तावत्
त्रमध्यवः पञ्चध्वरि पश्चात् वपुः कम
मध्यवः ०८ कथं धर्मं विशिष्टं धर्म
ग्रमध्यवम् । अथ ध्वनात्स्थिर नित्यं पञ्च
कृतिर्धिमम् । ०५ गवां मधिष्ठानं विघ्नकर ।
पुण्यदीपस्य प्रिय विद्या कृति कालान्तरे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

री. [illegible]

प्रति. री. [illegible]

१० [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रतिबिम्बं स्वेश्वरत्वं तथापीदं निर्मलं इत्यमेव स्फुरत्

तन्मया। स्वत्वंमव बिम्बोत्पादकत्वात्। सेव्योऽयं प्र

तिभासितं दर्पणवत् स्वच्छत्वात्। यतः क्रिया

तः माल्य प्रविकल्पनं मानवतीति स्वप्नेश्वर

मनुमानं विषयपञ्चकमाश्रित्य भवति इन्द्रिया

णि विषयाख्यानि स्फुरितेषु तत्त्वेन विषये

षडैव संयुते ततः सर्वाणि इन्द्रियाणि प्र

तिबिम्बं तथैव तत्र ॥ ०२ ॥ सर्वं स्वप्रतिबिम्बं ना

त्वत्वपतीत्य यः स्वप्रकाशिनि संविन्मयं प्र

काशीवति ॥ ०३ ॥ यत्स्वं नाशीकरोति मयाप

मयः पतन्निरोधेन मते नास्ति ॥ ०३ ॥ यत्स्व

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन, नानवा-
प्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥ यदि ह्यहं न
वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः मम वर्त्मानुवर्त-
न्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥२३॥ उत्सीदेयुरिमे
लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् सङ्करस्य च कर्ता
स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः २४ सक्ताः
कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत कुर्याद्वि-
द्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् २५
सुद्धरेअनुकर्मसु निगृह्य स्थाप्य तथैव तु चतः
करणुकर्तृत्वममत मतापर नामेनुद्वेषु
किञ्चिन्मन्मुखो यो न भयेन्द्रो निगडं भो दे क

ेति स्वधितु कालीयभिमभिहेतन्वत तमह तव
तभाधिभिहु एनकर्मयेमधुत्तुः धृतुधृलीय
धृपारिधृतभतभेधि कर्मधृवेतु त्लेकनगरः धृये
एनभिहह ठगवनद्वनभेव मक्षुतुीकेति त-
भमभत्राणवकालीयंकभत्राद्ता किंमविष्टि
वेहृणव कर्ममेतुएतुल्लेकनं भृणगरु : एवेक
धृभिहुधरु मिथिलितभृवहुवेनधृत्रुमिलव
लेशयते यतः कर्मकभनंमा नभेतुभदतित्स्नन
एरंमा नमृयितं. मथमा मिथिली ठवत्ति यत
भ. गी. ७३ भुतभहृशूनेनधृतः मेतवृभुहेमनं विमल
नंम उधं धरभेयभनतु ९ उनगरुयठमयेत्र
णियमधभेतमद — ३१ ॥ नवृभुहेतं

जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् । जोषयेत्सर्वकर्मा-
णि विद्वान्युक्तः समाचरन् २६ स्वयमेव-
व्यक्तभावः कर्माणि [illegible] न स लोकत्वं [illegible]
[illegible] [illegible] तत्सर्वं [illegible]यति २७
[illegible]: क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि
सर्वशः अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति
मन्यते २८ तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्म
विभागयोः गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न
सज्जते ॥ ९ ॥ प्रकृतेर्गुणसंमूढाः स-
ज्जन्ते किल कर्माणि क्रियन्ते [illegible]
करोति [illegible]
[illegible] कर्मविभाग तत्त्ववित् प्रकृतिः करोति मम

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

लोकसंग्रहमेवापि कर्तुमर्हसि ॥३१॥ ये मे मतमिदं

तिष्ठन्ति नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते

सर्वकिल्बिषैः ॥३३॥ ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठ तिष्ठन्ति

न्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टा-

नचेतसः ॥३४॥ यत्त्वहं मतमास्थाय कश्चि-

त्क्लिष्टं करोति तत्कर्म न वर्तुकं यत्किंचित्संसु [illegible] ये

न संमूढ [illegible] [illegible] संसेष्वृते [illegible] सर्वतं

[illegible] [illegible] विद्वन् ॥३४॥ सदृशं चेष्ट-

ते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं यान्ति भू-

तानि निग्रहः किं करिष्यति ॥३५॥ ये पि मज्ज्ञा-

नतत्त्वज्ञा [illegible] विपश्चितः कश्चित्

स्यापि तेऽपि मद्भक्ता [illegible] एव [illegible]

यत्कृतान्तं प्रविष्टमीनं प्रकृत्या विलयः स्तुत्स्म
कस्तु निःसत्त्वेऽति कश्चिन्न्यसि निगडः ३५।
कथं तद्विवर्तु ऽतस्मा — ऽइन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे
रागद्वेषौ व्यवस्थितौ। तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य
परिपन्थिनौ ३६ श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परध
र्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भय
ावहः ॥३७॥ अंशभागीस प्रति विषयं रागद्वेषम
गच्छति यतः कामात्स्फुटकण्टकल्पैवि
अग्रहादिभङ्गतऽति ममभयि कोऽत्रमिव
वदांत्तुचेत ह्युनिर्भंममतिल्ल रभ्रूयं विशेषः
प्र. श्रेयं नः सिद्धत्वः संचार प्रवृत्तमन्ये स्वरूप
गी. मातिल्ल न्यभिमुकिंक्रिष्टपापात्मकेवन्नः
३५ स्वरूपादि दृष्टयान्तपापीश्वरमनिग्रहस्फावन

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]